Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 717–722

प्राचीन काल में सोनीपत: एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. नवीन वशिष्ठ[1]

[1] सहायक प्रोफेसर, इतिहास राजकीय महिला महाविद्यालय, सोनीपत

ABSTRACT

यह शोध पत्र भारत के हरियाणा राज्य में स्थित एक प्रमुख ऐतिहासिक शहर सोनीपत के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डालता है। ऐतिहासिक रूप से "स्वर्णप्रस्थ" नाम से पहचाना जाने वाला सोनीपत, वैदिक और महाजनपद युग में एक प्रमुख शहरी केंद्र था। यह शोध पत्र सिंधु घाटी को गंगा बेसिन से जोड़ने वाले प्रमुख व्यापार मार्गों पर इसकी रणनीतिक स्थिति के कारण इसके भौगोलिक महत्व की जांच करता है, जिसने एक वाणिज्यिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में इसके विकास को सुविधाजनक बनाया। यह शोध प्राचीन किलेबंदी, शिलालेख और कलाकृतियों जैसे पुरातात्विक निष्कर्षों को वैदिक ग्रंथों, महाभारत और मौर्य और गुप्त काल के इतिहास सहित साहित्यिक स्रोतों के साथ एकीकृत करता है। ये स्रोत सामूहिक रूप से क्षेत्रीय राजनीति, अर्थव्यवस्था और संस्कृति में सोनीपत की भूमिका पर प्रकाश डालते हैं। यह अध्ययन कुरु वंश के साथ सोनीपत के संबंध और महाभारत के संदर्भ में इसके महत्व पर चर्चा करता है, इसकी ऐतिहासिक और पौराणिक भूमिकाओं की व्याख्या की खोज करता है। इसके अतिरिक्त, यह मौर्य और गुप्त साम्राज्यों के दौरान शहर के विकास और प्रशासनिक भूमिकाओं का विश्लेषण करता है, क्षेत्रीय शासन और व्यापार में इसके योगदान पर प्रकाश डालता है। यह शोध सोनीपत के ऐतिहासिक महत्व और प्राचीन भारत के सांस्कृतिक और आर्थिक परिदृश्य में इसके योगदान को रेखांकित करता है तथा पुरातात्विक और पाठ्य साक्ष्यों को संश्लेषित करके, सोनीपत के विकास और क्षेत्र के व्यापक ऐतिहासिक आख्यान पर इसके प्रभाव का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करता है।

Keywords: पुरातात्विक, ऐतिहासिक. महाजनपद, मृदभांड, स्रोत

Corresponding Author
डॉ. नवीन वशिष्ठ,
naveenvashita@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.3734

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

भूमिका

सोनीपत की प्राचीनता पर कभी कोई संदेह नहीं रहा। सर एलेग्जेंडर कनिंघम द्वारा सत्य के रूप में स्वीकार की गई लोकप्रिय परंपरा इसे महाभारत में वर्णित पांच पथों—इंद्रपत, बागपत, तिलपत, सोनीपत और पानीपत--में से एक के रूप में पहचानती है, जिसे युधिष्ठर ने दुर्योधन से शांति की कीमत के रूप में मांगा था। यह महत्वपूर्ण है कि इन सभी स्थानों से तथाकथित महाभारत स्थलों से जुड़े चित्रित धूसर बर्तन मिले हैं जो 1950 के दशक में हस्तिनापुर में खुदाई के बाद सामने आए हैं।[1] इस प्रकार इसकी नींव महाभारत के युद्ध से पहले रखी गई होगी। हालाँकि यह बात संदिग्ध है क्योंकि सर सैय्यद अहमद खान का मानना था कि इसकी स्थापना युधिष्ठर के भाई अर्जुन के 13वें वंशज राजा सोनी ने की थी।[2] एक मान्यता के अनुसार काशी के राजा सोनीत कुमार ने यमुना नदी के किनारे पर सोनीतपुर नामक नगर आबाद किया।[3] 1883-84 के दिल्ली जिले के गज़ेटियर के अनुसार, "*यह शहर एक छोटी सी पहाड़ी के किनारे सुरम्य रूप से स्थित है, जो एक समतल मैदान में खड़ा है, जो स्पष्ट रूप से उन इमारतों के मलबे से बना है जो शहर के 3,000*

[1] R.E Frykenberg, 1986, "*Delhi Through the Ages: Essays in Urban History, Culture and Society*", Oxford University Press, p.5

[2] Punjab District Gazetteers, 1912, Volume V A, Delhi District, Lahore, p.217

[3] संदीप कुमार, 2005, "*सोनीपत का मध्यकालीन इतिहास*", एम.फिल शोध प्रबंध (अप्रकाशित), इतिहास विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, पृ.37

वर्षों के लंबे जीवन के दौरान इस एक स्थान पर टूट-फूट कर नष्ट हो गए थे।"[4]1866 ई. में, सोनीपत के लोगों ने पहाड़ी की चोटी से एक कुआँ खोदते समय, सतह के नीचे लगभग 70 या 80 फीट की गहराई से सूर्य की एक टेरा-कोटा आकृति प्राप्त की, जो सही सलामत थी। जनरल कनिंघम ने कहा कि यह छवि कम से कम 1,200 वर्ष पुरानी है।[5]

पुरातात्विक अध्ययन

एलेग्जेंडर कन्निंघम और बी.बी लाल जैसे विद्वानों तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग ने सोनीपत की ऐतिहासिकता को प्रमाणित किया है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तत्कालीन महानिदेशक एलेग्जेंडर कनिंघम ने 1871 ई. में उत्तरी भारत की पुरातात्विक क्षमता का पता लगाने की पहल की। इसका उद्देश्य साहित्यिक आख्यानों के आधार पर ऐतिहासिक स्थानों की पहचान करना था। उस प्रक्रिया में उन्होंने महाभारत के सोनप्रस्थ की पहचान आधुनिक शहर सोनीपत से की जिसके नाम पर इस जिले का नाम रखा गया। उन्होंने पहली बार सोनीपत के टीले से 1200 हिन्द-यूनानी सिक्कों के भंडार की भी खोज की और इस प्रकार, सोनीपत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला।[6] हालाँकि, लगभग 25 वर्षों तक पूरी तरह से शांति बनी रही, जब तक कि बी.बी. लाल ने महाकाव्यों में वर्णित कुछ ऐतिहासिक स्थानों की पहचान स्थापित करने के लिए क्षेत्र का पता लगाना शुरू नहीं किया। व्यापक सर्वेक्षण के दौरान उन्होंने सोनीपत शहर का भी दौरा किया और यहां से उत्तरी काले पॉलिश वाले बर्तन के कुछ ढेर एकत्र किए जिन्होनें प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में सोनीपत की बस्ती के अस्तित्व की पुष्टि की।[7] साठ के दशक की शुरुआत में दीक्षित ने कुछ हद तक बड़े पैमाने पर इस क्षेत्र का पता लगाने का इरादा किया था, हालांकि उन्होंने खुद को दिल्ली से करनाल तक रेलवे ट्रैक के एक विशेष क्षेत्र तक ही सीमित रखा था। इस अभ्यास ने इस क्षेत्र से चित्रित धूसर मृदभांड (Painted Grey Ware) और उत्तरी काले पॉलिश वाले मृदभांड (Northern Black Polished Ware) का प्रतिनिधित्व करने वाली बहुत कम, लेकिन महत्वपूर्ण बस्तियों को रिकॉर्ड में रखकर ज्ञात पुरातात्विक स्थलों की संख्या में वृद्धि की।[8]

लगभग इसी दौरान फ्लीट ने सोनीपत से राजा हर्षवर्धन की ताम्बे की मुहर मिलने की सूचना दी। 1973 ई. में मम्लूक राजवंश से संबंधित 1277 ई. के फ़ारसी में शिलालेख भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा सोनीपत से प्राप्त की गई थी। इसे गियासुद्दीन बलबन (1266-86 ई.) ने जारी किया था जिस पर सोनीपत के मुक्ता किरबेक का नाम अंकित है। इसी प्रकार, दीक्षित ने 1968 ई. में मध्ययुगीन काल का प्रतिनिधित्व करने वाली खेड़ी गुज्जर की साइट की सूचना दी। निस्संदेह ये सभी गतिविधियाँ किसी विशिष्ट समस्या के समाधान के लिए किसी भी ठोस प्रयास का आकार लेने के लिए सीमित, पृथक और असंबद्ध हैं। हालाँकि, साठ के दशक के अंत में सोनीपत में ख्वाजा खिजर की कब्र के संरक्षण के साथ एक महत्वपूर्ण दिशात्मक बदलाव आया। इस तरह का दृष्टिकोण लंबे समय से अपेक्षित था और न केवल मध्ययुगीन स्मारकों, बल्कि उनके ऐतिहासिक, सामाजिक और पुरातात्विक महत्व के लिए प्राचीन बस्तियों की भी सुरक्षा और संरक्षण के लिए अभी भी इसकी सख्त जरूरत है।[9]

इसके बाद, सूरजभान ने क्षेत्र के सांस्कृतिक कालक्रम को स्थापित करने और यथासंभव अधिक से अधिक बस्तियों को रिकॉर्ड में रखने के लिए एक व्यापक सर्वेक्षण किया। इसी तरह सिलक राम "*हरियाणा के रोहतक और हिसार जिलों के पुरातत्व*" पर अपने शोध के लिए क्षेत्र के सर्वेक्षण के लिए निकले। ये प्रयास अधिक से अधिक बस्तियों की खोज की दिशा में एक दिलचस्प नवाचार का हिस्सा थे।[10] इस प्रकार, सोनीपत जिले के कुछ हिस्सों (क्योंकि यह पहले जिला रोहतक का हिस्सा था) पर नए सिरे से ध्यान दिया गया। परिणामस्वरूप न केवल अच्छी संख्या में बस्तियों की खोज हुई, बल्कि सांस्कृतिक अनुक्रम भी स्थापित हुआ।[11] **सोनीपत में पुरातत्व के क्षेत्र में विभिन्न शोधकर्ताओं जैसे सिलक राम, सूरज भान, ब्रह्म दत्त, सुरेंद्र सिंह हुडा, अशोक कुमार, गुलाब सिंह, रामधन धनखड़, रमेश चंद्र ठाकरान, विनय कुमार दांगी, और हाल ही में प्रवीण कुमार ने महत्वपूर्ण कार्य किया है ।**[12]

[4]Gazetteer of Delhi District, 1883-84, Punjab Government, p.217
[5]Punjab District Gazetteers, op.cit.p.217
[6]Dr.R.C Thakran, 2000, "*Dynamics of Settlement Archaeology (Haryana)*", Gyan Publishing House, New Delhi, p.48
[7]Ibid., p.48-9
[8]Ibid.
[9]Ibid.
[10]Ibid.
[11]Ibid., p.49-50
[12]Parveen Kumar, 2020, "*A Brief Report on Archaeological Explorations in Sonipat Tehsil*", Proceedings of the Haryana History Congress, 5th Session, 25th -26th December, 2020, p.37

हालाँकि सोनीपत क्षेत्र में अब तक एक भी स्थल की खुदाई नहीं की गई थी, इसलिए हमें पड़ोसी क्षेत्र में मौजूद उत्खनन स्थलों पर भरोसा करना होगा और इन उत्खनन के परिणामों का सामान्यीकरण करना होगा।[13] प्रवीण कुमार नामक एक शोधार्थी द्वारा हाल ही में किये गये सर्वेक्षण के दौरान यह देखा गया कि अधिकांश स्थल या तो कृषि क्षेत्रों में परिवर्तित हो गए हैं या सड़कों, नहरों और घरेलू संरचनाओं को तैयार करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। कुछ साल बाद पुरातत्वविदों के लिए खुदाई के लिए कोई जगह ढूंढना बहुत मुश्किल हो जाएगा। यहां तक की आज, किसी स्थल को पहचानना बहुत कठिन है।[14] लेकिन फिर भी कुछ साइटें जैसे, गढ़वाल-3, खानपुर कलां, गंगेशर-1, सिवाना माल-1, महम्मदपुर माजरा, मोई हुडा-1 और रुखी-1 में समृद्ध पुरातात्विक संभावनाएं हैं और यदि खुदाई की जाए तो वे अतीत पर प्रकाश डाल सकते हैं। अन्यथा ये साइटें बिना किसी निशान और भविष्य के गायब होने के लिए अभिशप्त हैं और आगे आने वाली पीढ़ियां विशाल पुरातात्विक विरासत से वंचित हो जाएंगी।[15]

सिंधु घाटी सभ्यता

सोनीपत जिले का क्रमबद्ध लिखा कोई निश्चित प्राचीन इतिहास उपलब्ध नहीं है परन्तु इसकी प्राचीनता आद्य-ऐतिहासिक काल से मानी जाती है।[16] पुरातात्विक अन्वेषणों से पता चला है कि सबसे पहले इन क्षेत्रों में बसने वाले प्रारंभिक सिंधु घाटी अथवा हड़प्पा संस्कृति (सोथी-सिसवाल संस्कृति) से संबंधित हैं। इस क्षेत्र में पूर्व-हड़प्पा, हड़प्पा, उत्तर-हड़प्पा, चित्रित धूसर मृदभांड, प्रारंभिक ऐतिहासिक, उत्तरी काली पॉलिश वाले बर्तन और प्रारंभिक मध्ययुगीन काल के बर्तन मिले हैं जिससे पता चलता है कि जिले के कुछ हिस्से भिन्न-भिन्न लोगों द्वारा बसाए गए थे। इनमें से कुछ भागों में निरंतरता दिखाई देती है तो कुछ में अंतराल।[17] 2015 ई. में, एक शोधार्थी विभा पांडे ने सोनीपत जिले के हड़प्पा स्थलों पर एक अध्ययन किया। उन्होंने सोनीपत में 15 प्रारंभिक हड़प्पा, 17 परिपक्व हड़प्पा और 74 उत्तर हड़प्पा स्थलों की पहचान की है।[18] अब तक जिले के प्रारंभिक चरणों के ऐतिहासिक विकास की स्पष्ट रूपरेखा को जानने की लिए पुरातात्विक एवं साहित्यिक साक्ष्य बहुत कम मात्रा में उपलब्ध हैं।[19] यहाँ तक की कला के क्षेत्र में भी सोनीपत ने बहुत कम साक्ष्य उपलब्ध करवाए हैं। जिले से मूर्तिकला के केवल दो टुकड़े खोजे गए हैं। मूर्तिकला का पहला नमूना धतौरी गांव से प्राप्त हुआ है जो सोनीपत तहसील में जी. टी रोड पर स्थित लडसोली गांव के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। ये महिला आकृति का है जो गुप्त टेराकोटा कला का उत्कृष्ट नमूना है। उत्तोलित मिट्टी से बना, यह एक मजबूत महिला का चित्रण प्रस्तुत करता है जो उसके गोल चेहरे, चौड़ी आंखों, प्रमुख नाक तथा गरिमापूर्ण मातृसत्तात्मक मुखाकृति के लिए उल्लेखनीय है। उसकी सुंदरता घुंघराले बालों की शानदार शैली से समृद्ध है। हालाँकि गर्दन के नीचे का हिस्सा गायब है, लेकिन सिर की कलात्मकता और सुंदरता टेराकोटा कला के उच्च स्तर का संकेत देती है।[20] दूसरा नमूना सोनीपत के पूर्व में स्थित फाजिलपुर से प्राप्त होने वाली शेषशैय्या पर लेटे विष्णु की मूर्ति है, जो संभवतः 8-9 वीं शताब्दी ई. की है।[21]

कालीबंगा से प्राप्त होने वाले बर्तनों से समानता तथा गोहाना तहसील में स्थित गांव रिंढाणा में टीले की सतह से मिलने वाली मिट्टी-ईंट की दीवारों (mudbrick wall), मिट्टी के बर्तनों व अन्य अवशेषों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस जिले में बसने वाले प्राचीनतम लोग पूर्व हड़प्पाई थे।[22] उत्खनन से प्राप्त बर्तन कालीबंगा (राजस्थान) नामक स्थान से प्राप्त सामग्री से मिलते-जुलते हैं। इससे ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में यह क्षेत्र बहुत समृद्ध

तथा सभ्य समाज में रहा होगा।[23] जिले की भौतिक संस्कृति का अगला चरण छपरा और गढ़वाल गाँव से हड़प्पा के बर्तनों की खोज से चिह्नित है, जो 2300 से 1700 ई. पू. के हैं । इस साक्ष्य के आधार पर, इस चरण की संस्कृति के किसी भी पुनर्निर्माण का प्रयास करना संभव नहीं है। इन प्रारंभिक बसने वालों का शायद समय के साथ उत्तर हड़प्पावासियों (1700-1500 ई. पू.) ने अनुसरण किया, जिनके मिट्टी के बर्तन बुटाना, आहुलाना, नुरून

[13]Parveen Kumar, 2022, "*History and Archaeology of Sonipat Region of Haryana*", Ph.D Thesis (Unpublished), Department of History, Himachal Pradesh University, Shimla, p.268

[14]Ibid., p.278

[15]Ibid.

[16]Parveen Kumar, 2020, op.cit.p.45

[17]Jeet Ram Ranga, 1990, "*Haryana District Gazetteers: Sonipat*", Haryana Gazetteers Organization, Revenue Department, Chandigarh, p. 23

[18]Vibha Pandey, 2015, "*Harappan Archaeology of North-West India: A study based on Settlement Pattern in Haryana*", Ph.D Thesis (Unpublished), Faculty of Arts, Benaras Hindu University, Varanasi, p.116

[19]Jeet Ram Ranga, op.cit.p.23

[20]Savitri Sangwan, 1990, "*Chronology of Attacks and Battles in Ancient Haryana*", MPhil Dissertation (Unpublished), Department of History, Maharishi Dayanand University, Rohtak, p.56-7

[21]Silak Ram, 1971, "*Archaeology of Rohtak and Hisar District*" (Haryana), Kurukshetra, PhD thesis (KUK), Unpublished, p. 58-9

[22]Jeet Ram Ranga, op.cit.p.23

[23]संगीता कुमारी, 2010, "*जनपद सोनीपत का औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण प्रदूषण की समस्या--एक भौगोलिक अध्ययन*", शोध प्रबंध, भूगोल विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, पृ.42

खेड़ा और लेहेराड़ा जैसे स्थानों से बरामद किए गए हैं। मिट्टी के बर्तनों में मोटे तौर पर मजबूत लाल बर्तन थे। बर्तन चाक से बने हुए हैं और हल्के लाल स्लिप के साथ उपचारित होते हैं, कुछ टुकड़ों को लाल पृष्ठभूमि पर काले रंग के डिजाइन के साथ चित्रित किया गया है। मुख्य आकृतियों में तश्तरी, कटोरे, जार और फूलदान शामिल हैं। बाहरी तरफ क्षैतिज खांचे, कई लहराती छिन्न सजावट रेखाएं और समानांतर उंगली के निशान देखे जा सकते हैं। गांव लेहराड़ा से मिट्टी की चूड़ियां बरामद हुई हैं। खोजे गए स्थलों के रूप में इन दिवंगत लोगों के अलावा कुछ भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता है जैसा कि आसपास के जिलों के कई उत्खनन स्थलों के साक्ष्य से ज्ञात होता है कि इस संस्कृति ने एक निम्नीकृत रूप का प्रतिनिधित्व किया जो उनके मिट्टी के बर्तन, कला रूपों की दुर्लभता, और लिपि, मुहरों की विशिष्ट अनुपस्थिति में, मिट्टी की चूड़ियाँ, सेलखड़ी और बाट में झलकता है।[24]

वैदिक काल

सोनीपत क्षेत्र के इतिहास का अगला महत्वपूर्ण चरण वैदिक आर्यों से सम्बंधित है जो चित्रित धूसर मृदभांड का प्रयोग करते थे। इन लोगों के मिट्टी के बर्तन अनेक स्थानों से प्राप्त हुए हैं जैसे भावड़, चंडी, छपरा, घड़वाल, अहुलाना, खानपुर, नुरुन खेड़ा, अकबरपुर बरोटा, बुलंदपुर खेड़ी, गुमड़ और नकलोई। वैदिक साहित्य सोनीपत क्षेत्र के इतिहास पर कोई प्रकाश डालने में मदद नहीं करता है। संभवतः यह आर्यों की सांस्कृतिक गतिविधि के मुख्य केंद्र से दूर स्थित था (अर्थात् सरस्वती और दृषद्वती के बीच के क्षेत्र में)। संभवतः ये पांडवों के साम्राज्य में शामिल होगा जो पहले इंद्रप्रस्थ और बाद में हस्तिनापुर से शासन करते थे। ऐसी परंपरा प्रचलित है कि पांडवों ने कौरवों से पांच गांवों की मांग की थी, जिनके नाम पत् में समाप्त होते हैं, जो संस्कृत का हिंदी समकक्ष प्रस्थ है। पांडवों के कौरवों द्वारा इस मांग को अस्वीकार करने से महाभारत का युद्ध हुआ जो कुरुक्षेत्र में लड़ा गया था। परन्तु इस मान्यता के समर्थन में कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है कि सोनीपत युधिष्ठिर द्वारा कौरवों से शांति स्थापित करने के लिए मांगे गए गांवों में से एक था।[25] ऐसा माना जाता है कि सोनीपत में कामी रोड पर यानी राम लीला मैदान के पिछले हिस्से में मां महाकाली का एक प्राचीन मंदिर स्थित है, जो लगभग 6000 साल पुराना बताया जाता है। यह भी कहा जाता है कि कुरुक्षेत्र में युद्ध के लिए जाने से पहले पांडवों ने यहां प्रार्थना की थी और अपनी जीत के लिए मां काली का आशीर्वाद लिया था। पांडवों ने इस मंदिर के पास एक कुआं भी बनवाया था जिसे पांडवों का कुआं कहा जाता है।[26]

महाजनपद काल

सोनीपत क्षेत्र मत्स्य और कुरु महाजनपदों के मध्य स्थित था। उत्तर वैदिक काल में कुरु जनपद उत्तर में और मत्सय जनपद दक्षिण में स्थित था। यह उत्तर भारत में राजनीतिक गतिविधि का एक प्रमुख केंद्र बन गया। बौद्ध साहित्य, और विशेष रूप से दीघनिकाय में, इस क्षेत्र के बसे होने के प्रमाण मिलते हैं। इस ग्रन्थ में कम्मासदम्मा नामक एक बस्ती का वर्णन है जो महात्मा बुद्ध के उपदेशों से लाभान्वित हुई थी और जहाँ बुद्ध अपने दौरों के समय ठहरते थे। गाँव की पहचान सोनीपत में जी.टी. रोड पर स्थित गाँव कमाशपुर से की गई है। इस क्षेत्र से बुद्ध की एक पत्थर की मूर्ति की खोज इस स्थल के बौद्ध धर्म के साथ घनिष्ठ संबंध की पुष्टि करती है। इस गाँव की बसावट का उल्लेख महासुतसोम जातक में भी मिलता है जिसमें विशेष रूप से इसकी दुकानों, मेहराबों, द्वारों और झीलों का उल्लेख है। कुंडी या कुंडिया एक और गाँव था जिसमें पास के जंगल में अंगनिका भारद्वाज रहते थे और उसके करीब उग्गारामा था। यह स्थान या तो कुंडली या कुंडल से जुड़ा हो सकता है, दोनों ही स्थान सोनीपत जिले में हैं।[27]

सोनीपत का सबसे पहला साहित्यिक सन्दर्भ पाणिनि की अष्टाध्यायी में शोणाप्रस्थ के रूप में मिलता है जहाँ इसका वर्णन कुछ अन्य नगरों के साथ किया गया है जिनके नाम के अंत में प्रस्थ है।[28] इससे यह सिद्ध होता है कि पाणिनि के समय (सम्भवतः 600-400 ई.पू के मध्य) में सोनीपत नगर अस्तित्व में था और प्रसिद्ध नगरों में से था। पाणिनि से पहले इस नगर की स्थापना कब हुई, यहाँ निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

मौर्य काल

मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य (322-298 ई.पू.) द्वारा यूनानी शासक सेल्यूकस की 305 ई.पू. में पराजय के बाद हरियाणा विशाल मौर्य साम्राज्य का हिस्सा बन गया और इसे तक्षशिला में मुख्यालय के साथ उत्तरापथ नामक प्रशासनिक प्रभाग में शामिल किया गया। सुघ (अंबाला जिला), कुरूक्षेत्र, पानीपत, सोनीपत, रोहतक में उत्तरी काली पॉलिश मृदभांड की खोज और कई स्थानों पर मौर्यकालीन टेराकोटा की बरामदगी ने इस क्षेत्र पर मौर्य नियंत्रण को और अधिक प्रमाणित किया।इस क्षेत्र में मौर्य काल में विदेशी आक्रमण का कोई भय नहीं रहा और शांति और सुरक्षा कायम रही।[29]

हिन्द-यूनानी

मौर्यों के पतन के बाद इस क्षेत्र पर इंडो-ग्रीक आक्रमण हुआ। जिले का इतिहास बड़ी संख्या में हिन्द-यूनानी सिक्के के ढेर मिलने तक अन्धकार में डूबा रहा। इन सिक्कों पर ग्यारह हिन्द-यूनानी राजाओं-हेलिओकल्स, अपोलोडोटस, स्ट्रेटो, एंटिमाचस द्वितीय, एंटियालसीडास, फिलोक्सेनस, लिसियास,

[24]Jeet Ram Ranga, op.cit., p.24
[25]Ibid, p.24
[26]https://sonipat.gov.in/tourist-place/old-maa-kaali-temple/
[27]Jeet Ram Ranga, op.cit.p.25
[28]Ibid.
[29] H.A Phadke, 1990, "*Haryana: Ancient and Medieval"*, Harman Publishing House, New Delhi, p.33

मीनान्डर, डायोमेडिस, अमीनटास और हर्मियस के नाम अंकित हैं। इस खोज से कोई संदेह नहीं रह जाता है कि दूसरी शताब्दी ई. पू. के दौरान यूनानियों ने इस क्षेत्र पर हमला किया और पहली शताब्दी ई. पू. की अंतिम तिमाही या पहली सदी ई. की शुरुआत तक वहाँ शासन जारी रखा।[30] ऐसा प्रतीत होता है कि यूनानी आक्रमण केवल एक गुजरता हुआ चरण था और इसका लोगों के जीवन पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं पड़ा।[31]

कुषाण और यौधेय

सिलक राम द्वारा सोनिपत क्षेत्र से खोजे गए 10,000 तांबे के सिक्कों के ढेर से पता चलता है कि इस क्षेत्र पर कुषाणों एवं यौधेयों का भी शासन रहा। ये चार श्रेणियों के हैं- रामदत्त, कुषाण, यौधेय और पुरी-कुषाण सिक्के के आद्य प्रकार। पहले में, केवल एक सिक्का है और शासक की पहचान संभवतः ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के अंत में या पहली शताब्दी ई.पू. की शुरुआत में मथुरा पर शासन करने वाले व्यक्ति से की जा सकती है।[32] इस क्षेत्र पर कुषाण प्रभुत्व की पुष्टि सोनीपत से 5,000 तांबे के सिक्कों के भंडार की खोज से भी होती है, जो कनिष्क प्रथम, हुविष्क, वासुदेव, कुषाण प्रमुखों और यौधेय के समय से संबंधित हैं।[33] सिक्कों में पुरी-कुषाण सिक्कों के साथ-साथ वजन में भी कुछ अंतर हैं। आकार और वितरण में भिन्नता के आधार पर प्रोटो-टाइप पुरी-कुषाण सिक्कों की पहचान तीसरी-चौथी शताब्दी ईस्वी के उत्तर-पश्चिमी भारत के परवर्ती-कुषाणों से की गई है, जिन्हें समुद्रगुप्त के साथ संबंध स्थापित करने के लिए जाना जाता है। अन्वेषण के दौरान, सोनीपत से बड़ी संख्या में विशिष्ट कुषाण मिट्टी के बर्तन मिले, जो इस क्षेत्र पर उनके शासन का संकेत देते हैं।[34]

महान कुषाण साम्राज्य के पतन के बाद यह क्षेत्र यौधेयों के शासन में आ गया। सोनीपत यौधेयों के मुख्य नगरों में से एक था।[35] प्रोफेसर के.सी यादव के अनुसार सोनीपत से यौधेयों के सिक्कों का मिलने वाला ढेर बहुत महत्वपूर्ण है।[36] सिक्कों से पता चलता है कि यौधेय तीसरी-चौथी शताब्दी ई. के प्रमुख गणतांत्रिक लोग थे। उनके सिक्कों से उनकी संघीय इकाइयों या प्रशासनिक प्रभागों के साथ-साथ यौधेय गणस्य जयः (अर्थात यौधेय गणराज्य की जीत) की किंवदंती अंकित है। लगभग सभी विद्वान् मानते हैं कि यौधेयो का राज्य प्राचीन भारत में सबसे बड़ा गणराज्य था।[37] खोकराकोट (रोहतक) इसकी राजधानी थी। सिक्कों पर छपे निशान, जो सोनीपत एवं करनाल से प्राप्त हुए है, उनसे प्रमाणित होता है कि यौधेय सम्भवतः अदम्य साहस और शौर्य के प्रतीक थे।[38] स्वामी ओमानंद सरस्वती के अनुसार सोनीपत नगर यौधेयों का एक अत्यंत प्राचीन दुर्ग था जिसके खंडहर आज भी विद्यमान हैं। गुप्त वंश के शासक समुद्रगुप्त के उत्थान से यौधेयों के वर्चस्व का अंत हुआ। इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख में कहा गया है कि यौधेयों ने समुद्रगुप्त के उग्र आदेशों का पालन किया। राजनीतिक परिदृश्य से यौधेयों के गायब होने के बाद इस क्षेत्र का क्या हुआ, यह ज्ञात नहीं है।[39]

गुप्त काल

यौधेयों के बाद यह क्षेत्र संभवतः गुप्त शासकों के प्रभाव में आ गया होगा। आर.सी. मजूमदार ने यह विचार प्रस्तुत किया है कि वर्तमान हरियाणा संभवतः समुद्रगुप्त (335-75 ई.) के साम्राज्य में सम्मिलित था। उनके अपने शब्दों में, "*पश्चिम में यह पंजाब तक फैला हुआ था, संभवतः इसमें लाहौर और करनाल के बीच के पूर्वी जिले शामिल थे, अंतिम नाम (यानी करनाल) से सीमा यमुना नदी के साथ चंबल के संगम तक जाती थी।*" पुरातत्त्वविद एम.एस. वत्स ने 1915-16 में हिसार जिले के मिताथल में खोजे गए 86 सोने के सिक्कों के साथ समुद्र गुप्त के एक दुर्लभ सोने के सिक्के का वर्णन किया है। इन सिक्कों में से 33 समुद्रगुप्त के थे, जबकि शेष इस क्षेत्र के बाद के कुषाण शासकों द्वारा जारी किए गए थे।[40]

पुष्यभूति वंश

संभवतः सोनीपत क्षेत्र गुप्त शासकों के पतन के बाद पुष्यभूति या वर्धन वंश के उदय तक हूणों के अधीन रहा होगा। इस दौरान सोनीपत से पहली बार हर्षवर्धन की तांबे की मुहर के रूप में कोई एतिहासिक दस्तवेज़ सामने आता है। यह मुहर जे.एफ. फ्लीट द्वारा मेहर सिंह रामरतन महाजन से प्राप्त की गई थी जो सोनीपत का एक व्यापारी था।[41] 1888 में फ्लीट ने हर्ष की मुहर का कॉर्पस इंस्क्रिप्शनम इंडिकारम के तृतीय खंड में प्रकाशन किया। इस

[30]Jeet Ram Ranga, op.cit.p. 26
[31]H.A Phadke, op.cit.p.35
[32]Jeet Ram Ranga, op.cit.p.26
[33]H.A Phadke, op.cit.p.39
[34]Parveen Kumar, 2022, op.cit.p.275
[35]डॉ. साधूराम शारदा, 1978, "*हरियाणा--एक सांस्कृतिक अध्ययन*", भाषा विभाग, चंडीगढ़, पृ.60
[36]Kripal Chandra Yadav, 1968, "*Haryana: Studies in History and Culture*", Kurukshetra University, p.31
[37]के.सी यादव, 1982, "*हरियाणा का इतिहास (आदि काल से 1000 ईसवी तक)*", मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ.123
[38]संदीप कुमार, 2005, पूर्वोक्त, पृ.41
[39]Jeet Ram Ranga, op.cit.p.27
[40]Kripal Chandra Yadav, 1968, op.cit. p.34
[41]संदीप कुमार, 2005, पूर्वोक्त, पृ.276

प्रकार हर्ष के अध्ययन को पुरालेखीय आधार प्रदान किया गया।[42] स्वामी ओमानंद सरस्वती के अनुसार सोनीपत और नालंदा से प्राप्त महाराजा हर्षवर्द्धन की तांबे की मोहरों को मिलाकार देखने से हर्षवर्द्धन की वंशावली निश्चित होती है।[43] मुहर के शीर्ष पर एक बैल है और नीचे शिलालेख है, भाषा संस्कृत है और रचना गद्य में है। यह राज्यवर्धन से लेकर हर्ष तक के राजवंशों की वंशावली प्रदान करता है, साथ ही उनकी राजनीतिक स्थिति के साथ-साथ उनके धार्मिक रुझान भी प्रदान करता है।[44] संभवतः सोनीपत किसी अधिकारी का मुख्य कार्यालय रहा होगा।[45] हर्षवर्द्धन ने शुरू में थानेश्वर से शासन किया लेकिन फिर अपनी राजधानी बदलकर कन्नौज कर ली। वर्धनो की राजधानी कन्नौज में स्थानांतरित होने के पश्चात सोनीपत क्षेत्र का पतन आरम्भ हुआ जो 1206 ई. में दिल्ली सल्तनत की स्थापना तक जारी रहा।[46]

निष्कर्ष

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि सोनीपत का प्राचीन इतिहास अपनी पौराणिक जड़ों, पुरातात्विक महत्व और सामरिक महत्व से चिह्नित है। हड़प्पा सभ्यता का हिस्सा होने से लेकर महाभारत की महाकाव्य कथा में भूमिका निभाने तक और बाद में मौर्य और गुप्त साम्राज्यों के तहत समृद्ध होने तक, सोनीपत प्राचीन भारत में एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और आर्थिक केंद्र रहा है। इसका समृद्ध इतिहास भारतीय उपमहाद्वीप के व्यापक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विकास को दर्शाता है।

[42]Shankar Goyal, 1992, "*History and Historiography of the Age of Harsha*", Kusumanjali Prakashan, Jodhpur, p.9
[43]स्वामी ओमानंद सरस्वती, 2000, "*हरियाणा के प्राचीन मुद्रांक*", गुरुकुल झज्जर, पृ.34
[44]Jeet Ram Ranga, op.cit.p.27
[45]डॉ. साधु राम शारदा, 1978, "*हरियाणा--एक सांस्कृतिक अध्ययन*", भाषा विभाग, हरियाणा, चंडीगढ़, पृ, 60
[46]Jeet Ram Ranga, op.cit.p.27